संपादकीय

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की की वार्षिक गृह पत्रिका ''प्रवाहिनी'' का नवीनतम अंक सुधी पाठकों को सौंपते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।

हम सभी जानते हैं कि सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में हिंदी पत्रिकाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। इससे हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए अनुकूल वातावरण सृजित होता है तथा कर्मचारियों में हिंदी में काम करने के प्रति नवीन चेतना उत्पन्न होती है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर हमारी इस पत्रिका का विगत 29 वर्षों से निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

हम आशा करते हैं कि पिछले अंकों की भांति यह अंक भी प्रबुद्ध पाठकों को रोचक एवं ज्ञानवर्धक लगेगा और यह राजभाषा कार्यान्वयन तथा प्रचार–प्रसार में सहायक सिद्ध होगा।

प्रस्तुत अंक में जिन विद्वत रचनाकारों के महत्वपूर्ण, रोचक एवं ज्ञानवर्धक लेखों को शामिल किया गया है, उनका हम सहृदय आभार व्यक्त करते हैं तथा शुभकामनाएं समर्पित करते हैं जिनके समर्थन एवं सहयोग से इस पत्रिका का प्रकाशन संभव हो सका है। हमने कोशिश की है कि इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों की भाषा सरल तथा सुबोध रखी जाए ताकि हर वर्ग का पाठक इन रचनाओं से लाभान्वित हो सके।

हमारा मानना है कि आपकी बहुमूल्य प्रतिक्रियाएं और सुझाव इस पत्रिका को और बेहतर बनाने की दिशा में सहायक सिद्ध होंगे, अतः आपके बहुमूल्य सुझावों का स्वागत है।

(संपादक मंडल)